- ❖ कीट नियंत्रण पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ पशुशाला की नियमित सफाई करें।

निष्कर्ष:

लम्पी स्किन डिजीज एक गंभीर, संक्रामक एवं आर्थिक रूप से नुकसानदायक रोग है, लेकिन सही जानकारी, जागरूकता और वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा इसे नियंत्रित किया जा सकता है। किसानों को चाहिए कि रोग के शुरुआती लक्षण पहचानें, संक्रमित पशु को अलग रखें तथा तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सक या पशुपालन विभाग से संपर्क करें।

समय पर टीकाकरण, स्वच्छता, कीट नियंत्रण और संतुलित पोषण अपनाकर न केवल पशुओं को सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि पशुपालकों की आय और आजीविका को भी सुरक्षित किया जा सकता है।

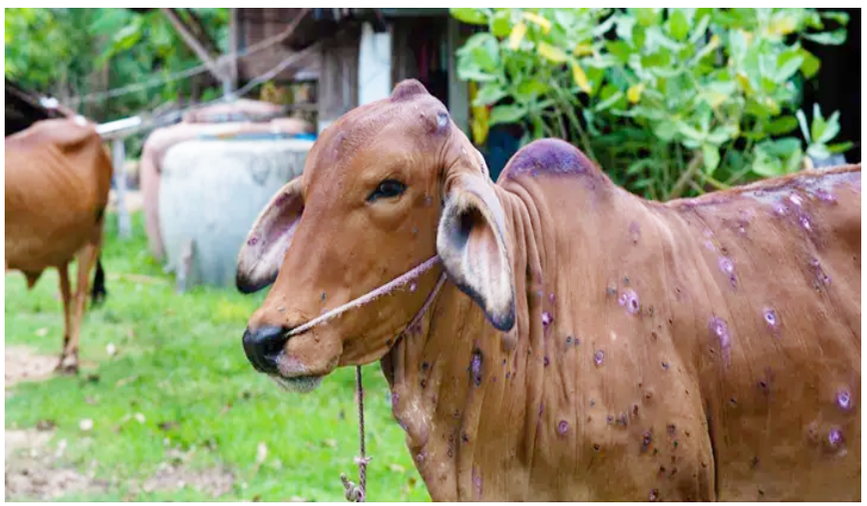

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा

योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/81/FFPF-4/2026/DEE/BASU-Patna

गांठदार त्वचा रोग/लम्पी स्किन डिजीज (LSD)

योगेन्द्र सिंह जादौन, मृत्युंजय कुमार,

जय प्रकाश गुप्ता एवं प्रज्ञा भदौरिया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली के फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के अंतर्गत प्रकाशित

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

गांठदार त्वचा रोग/लम्पी स्किन डिजीज (LSD)

लम्पी स्किन डिजीज का हिंदी अर्थ है– "त्वचा पर गांठ बनने वाला संक्रामक रोग". लम्पी स्किन डिजीज (LSD) गाय–भैंसों में होने वाली एक अत्यंत संक्रामक वायरल बीमारी है, जो तेजी से फैलती है और पशुओं की उत्पादकता पर गंभीर प्रभाव डालती है। इस रोग के कारण पशु के शरीर पर गांठें बन जाती हैं, दूध उत्पादन घट जाता है, पशु कमजोर हो जाते हैं तथा कभी–कभी मृत्यु भी हो सकती है। समय पर पहचान, रोकथाम और उचित प्रबंधन से इस रोग से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

रोग का कारण

- ❖ यह रोग लम्पी स्किन डिजीज वायरस (LSDV) से होता है।
- ❖ वायरस मुख्यतः रक्त चूसने वाले कीटों (मच्छर, मक्खी, किलनी/टिक) के माध्यम से फैलता है।
- ❖ संक्रमित पशु के लार, नाक से स्राव, दूध और त्वचा की गांठों के संपर्क से भी रोग फैल सकता है।
- ❖ संक्रमित पशुओं की आवाजाही से स्वस्थ पशुओं में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

प्रमुख लक्षण

- ❖ तेज बुखार।
- ❖ शरीर, गर्दन, थन, पूँछ व टांगों पर कठोर गोल गांठें।
- ❖ आँख व नाक से पानी/स्राव।
- ❖ दूध उत्पादन में भारी कमी।
- ❖ चलने में कठिनाई, कमजोरी।
- ❖ कभी–कभी गर्भपात या बाँझपन।

रोग का प्रबंधन

1. संक्रमित पशु का प्रबंधन

- ❖ रोगी पशु को तुरंत स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- ❖ अलग बाड़े या कमरे में रखें।
- ❖ अलग बर्तन व चारा व्यवस्था करें।

2. पशुशाला प्रबंधन

- ❖ नियमित सफाई एवं कीटाणुनाशक का प्रयोग।
- ❖ गोबर व मूत्र की सही निकासी।
- ❖ जलभराव न होने दें।

3 कीट नियंत्रण

- ❖ पशुशाला में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव।
- ❖ पशुओं पर कीट–रोधी दवाओं का प्रयोग।
- ❖ मच्छरदानी एवं धुआँ की व्यवस्था।

4. पोषण प्रबंधन

- ❖ हरा चारा एवं सूखा चारा संतुलित मात्रा में दें।
- ❖ खनिज मिश्रण एवं नमक उचित मात्रा में दें।
- ❖ स्वच्छ व ताजा पानी पिलायें।

5. टीकाकरण

- ❖ पशु चिकित्सक की सलाह से नियमित टीकाकरण करायें।
- ❖ स्वस्थ पशुओं को प्राथमिकता से टीका लगवाएँ
- ❖ **रोग का उपचारः** लम्पी स्किन डिजीज एक वायरल रोग है, अतः इसका कोई निश्चित इलाज नहीं है। उपचार केवल लक्षणों के आधार पर किया जाता है।

1. सहायक उपचार

- ❖ बुखार व दर्द कम करने की दवाएँ (पशु चिकित्सक की सलाह से) समय पर दें।
- ❖ द्वितीयक संक्रमण रोकने हेतु एंटीबायोटिक का प्रयोग करें।
- ❖ घावों पर एंटीसेप्टिक दवा लगायें।

2. सहायक पोषण

- ❖ विटामिन A, D, E का समुचित प्रयोग करें।
- ❖ मिनरल मिक्सचर खिलायें।
- ❖ इलेक्ट्रोलाइट का प्रयोग करें।

3. पशुपालक को ध्यान देने योग्य बातें:

- ❖ नियमित निगरानी करें।
- ❖ गंभीर मामलों में अस्पताल में उपचार करवायें।
- ❖ स्वयं दवा न दें, केवल पशु चिकित्सक की सलाह लेकर दवा दें।

4. रोकथाम के उपाय

- ❖ समय पर टीकाकरण ।
- ❖ नए पशु को लाने से पहले जांच ।
- ❖ बीमार पशु को तुरंत अलग रखना ।